कृष्णदास संस्कृत सीरीज
९७

पद-वाक्य-प्रमाणज्ञस्य
श्रीभर्तृहरेः

वाक्यपदीयम्

[ब्रह्मकाण्डम्]

श्रीवामदेवाचार्यस्य
संस्कृत-हिन्दी-
'प्रतिभया' व्याख्यया
समन्वितम्

सम्पादकः
आचार्य पं० सत्यनारायण खण्डूड़ी

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

भूमिका

वाक्यपदीय व्याकरण का अद्भुत ग्रन्थ है। पाणिनि-अष्टाध्यायी के सूत्र 'जञ्जाल' में उलझा हुआ और वृत्ति, प्रक्रिया, टीका, अनुटीका के भँवर में चक्कर खाता हुआ व्याकरण का अध्येता जब वाक्यपदीय के रमणीय मणिद्वीप में पहुँचता है तो उसे एक अद्भुत आनन्द का साक्षात्कार होता है। नव्यों के 'ननु-नच'-जनित घाव सहसा भर जाते हैं। वर्षों तक झेले कष्टों से मानों उसे मुक्ति मिल जाती है। उसे अपने परिश्रम की सार्थकता मिल जाती है। अपनी सुदीर्घ वैयाकरण-यात्रा में उसे महाभाष्य के अतिरिक्त कहीं कोई ऐसा पड़ाव नहीं मिला जो उसे दो घड़ी की भी विश्रान्ति दे सके। ऐसा थका माँदा वैयाकरण-यात्री जब इस वाक्यपदीय-मणिद्वीप में पहुँचता है तो निश्चय ही उसे अपूर्व अलौकिक शान्ति प्राप्त होती है।

वाक्यपदीय वैयाकरण-निकाय में आकरग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है। महाभाष्य के बाद सर्वाधिक प्रामाण्य इसी ग्रन्थ का है। महाभाष्य के समान ही यह ग्रन्थ वैयाकरणों के लिए श्रद्धा का आस्पद है। बाद के वैयाकरणों, जैसे—कैयट, हरदत्त, जिनेन्द्रबुद्धि, भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट, नागेश आदि ने अपने ग्रन्थों और कथनों की प्रामाणिकता के लिए बार-बार वाक्यपदीय को उद्धृत किया है। न केवल वैयाकरणों ने अपितु वैयाकरणेतर ग्रन्थकारों ने भी आकरण या निराकरण के लिए वाक्यपदीय को उद्धृत किया है। इनमें अत्यन्त प्रतिष्ठित दार्शनिक भी हैं। जैसे—शङ्कराचार्य, कुमारिलभट्ट, महेश्वर, अभिनवगुप्त, कमलशील (बौद्ध), पार्थसारथि मिश्र, वाचस्पति मिश्र, हरिस्वामी, जयन्तभट्ट और अनेक अन्य। वर्तमान युग में भी भाषा-विज्ञान की दृष्टि से विदेशों में भी वाक्यपदीय का अध्ययन अत्यन्त रुचि और सम्मान के साथ किया जा रहा है।

वाक्यपदीय : स्वरूप——

वाक्यपदीय मुख्यतः वाक्य-प्रतिपादक ग्रन्थ है। वाक्य का व्यावहारिक और दार्शनिक स्वरूप इसका प्रतिपाद्य विषय है और इसका प्रतिपादन करते हुए व्याकरण के समस्त सिद्धान्तों, प्रमेयों का विवेचन इस ग्रन्थ में हुआ है। साथ ही आनुषङ्गिक रूप से भारतीय दर्शन की सभी धाराओं का आकलन भी इसमें स्वभावतः हो गया है। महाभाष्य में जिन न्यायबीजों के दर्शन सूत्रों और वार्तिकों के व्याख्यानों में यत्र-तत्र बिखरे रूप में होते हैं, वे वाक्यपदीय में एक व्यवस्थित क्रमबद्धता के साथ दिखाई देते हैं। काशिका ने इसे 'शब्दार्थसम्बन्धीयं प्रकरणम्'' कहा है।